ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 182

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

# विशिष्ट एवं अपवंचित बालक

**शिखा श्रीवास्तव**

असि. प्रोफेसर– मनोविज्ञान विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पीजी कालेज, सुदिष्टपुरी, रानीगंज– बलिया (उ.प्र.)भारत

**Received- 02.12.2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: rksharpur2@gmail-com**

***सारांश :*** *व्यक्तिगत भिन्नता का अध्ययन करते समय हमें यह भली–भांति ज्ञात हो गया है कि विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो बालक आते हैं, उनमें सामान्य बालकों के अतिरिक्त वह कुछ बालक ऐसे भी होते हैं जो शारीरिक मानसिक और व्यक्तिगत भेद की दृष्टि से समान नहीं होते, इनमें कुछ तीव्र बुद्धि, कुछ मंद बुद्धि और कुछ बिछड़ें हुए तथा कुछ शारीरिक दोषयुक्त बालक होते हैं। इस प्रकार के बालकों की समस्याएं विशिष्ट होती हैं। विशिष्ट एवं सामान्य बालक में अंतर पाए जाते हैं।*

***कुंजी शब्द– विशिष्ट बालक, व्यक्तिगत भेद, तीव्र बुद्धि, मंद बुद्धि, दोष युक्त, पिछड़ें, समस्याऐं, जानोंपार्जन, संवेगात्मक।***

विशिष्ट बालक प्रायः शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते हैं, जबकि सामान्य बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं। विशिष्ट बालक के शारीरिक विकास का प्रभाव उनके मस्तिष्क पर पड़ता है तथा यह विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों से ग्रस्त रहते हैं। विशिष्ट बालकों की तुलना में सामान्य बालक मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। यह मानसिक रोगों से ग्रस्त नहीं होते। विशिष्ट बालकों की बुद्धिलब्धि या तो बहुत अधिक 140 से भी ज्यादा होती है या फिर बहुत कम 90 से भी कम होती है। इसके विपरीत सामान्य बालकों की बुद्धि साधारण 90 से 110 के बीच होती है।

**विशिष्ट बालक –** कक्षा के अधिकांश बालक – बालिकाएं सामान्य अथवा औसत श्रेणी के होते हंम और इनकी समस्यायें भी प्रायः एक समान ही होती है, किंतु उसी कक्षा में कुछ बालक ऐसे भी होते हैं, जो किसी बात को सामान्य बालक से बहुत तीव्र समझ जाते हैं या साधारण और सरल बात को समझने में देर लगाते हैं या कठिनाई से समझते हैं।

इन बालकों को ज्ञानोंपार्जन संबंधी मानसिक संवेगात्मक, समाजिक, व्यक्तिगत या शारीरिक समस्याएं विशिष्ट प्रकार की होती हैं। इस प्रकार के बालक दूसरों से अधिक तीव्र बुद्धि या मंदबुद्धि के होते हैं। साधारण बालकों की तुलना में उनके सामान्य शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास या तत्वों में अंतर होता है। ऐसे बालकों को हम ''विशिष्ट या असाधारण'' बालक कहते हैं।

**1. क्रो और क्रो –** ''विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट शब्द या गुणों या उस गुण को रखने वाले व्यक्ति पर लागू किया जाता है, जिसके कारण और व्यक्ति अपनसाथियों का विशिष्ट ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है।''

**विशिष्ट बालकों के प्रकार –** शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, भावात्मक तथा सामाजिक विकास में भिन्नता के आधार पर विशिष्ट बालकों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गी.त किया जा सकता है – 1. प्रतिभाशाली बालक, 2. पिछड़े बालक, 3. विकलांग बालक, 4. समस्यात्मक बालक, 5.अपवंचित बालक, 6. सृजनात्मक बालक, 7. मंदबुद्धि बालक, 8. अधिगम निर्योग्य बालक, 9. अपराधी बालक।

विद्यालय में जितने छात्र होते हैं, वे सभी सामान्य बालक नहीं कहे जा सकते। प्रत्येक विद्यालय में लगभग 10ः छात्र होते हैं, जिनकी शिक्षा–दीक्षा हेतु विशेष व्यवस्था की आवश्यकता होती है । अध्यापकों को इन वंचित बालकों की पहचान तथा इनके शिक्षा की विशेष
विधियों का परख होना परम आवश्यक है। सुविधा से वंचित बालकों का समुचित विकास एवं शिक्षा व्यवस्था करते है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामबाबू गुप्ता, विद्यालय प्रशासन, संगठन – आलोक प्रकाशन लखनऊ – इलाहाबाद।
2. डॉ. मालती सारस्वत, भारतीय शिक्षा का विकास, आलोक प्रकाशन, लखनऊ – इलाहाबाद।
3. पेस्टन जी, भूमिका द्वन्द, अहमदाबाद।
4. ए. के. पाण्डेय, भूमिका द्वन्द का संगठन, सारनाथ, वाराणसी।
5. डॉ. मधुरिमा सिंह, शिक्षा के सिद्धान्त, आलोक प्रकाशन, लखनऊ – इलाहाबाद।

*****

अनुरूपी लेखक